The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

16. आदिवासियों के विकास में डिजिटल मीडिया की भूमिका

साकेत गोयल
शोधार्थी
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा

डॉ. ऋषिकेश कुमार गौतम
सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा

शोध सारांश

भारत की जनसंख्या, विविधता और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सकारात्मक प्रगति हुई है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि सूचना और सामाजिक जागरूकता मानव सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण कारक बनकर उभरे हैं। समाज के स्वरूप, प्रकृति और कार्यप्रणाली में लगातार बदलाव देखे जा रहे हैं। मीडिया भी इन बदलाव से अछूता नहीं है। आज का दौर डिजिटल का दौर है। हर तरफ डिजिटल मीडिया का बोलबाला है। इस बदलते दौर में समाज का कोई भी तबका व क्षेत्र डिजिटल मीडिया के प्रभावों से अछूता नहीं है। ऐसे में आरवासी समाज कैसे अछूता रह सकता है? इस शोध में डिजिटल मीडिया का आदिवासी समाज के विकास में भूमिका का पता लगाने की कोशिश की गई है।

मुख्य **शब्द-** डिजिटल मीडिया, आदिवासी विकास व मीडिया, आदिवासी समाज व सोशल मीडिया

भूमिका

माना जाता है कि आदिवासी भारत के मूल निवासी हैं क्योंकि आदिकाल से ही इस देश में निवास कर रहे हैं। भारत में अनेक प्रकार की अनुसूचित जनजाति निवास करती हैं जिनमें प्रमुख हैं संथाल, गोंड, भील, देगा, सहरिया आदि। भारत

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

अनेकता में एकता वाला देश है। भारत के राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, झारखंड आदि प्रदेशों में आदिवासी बड़ी संख्या में निवास करते हैं। इन सभी जनजातियों व समूहों के विकास के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकार अनेक योजनाएं संचालित कर रही हैं, बावजूद इसके वास्तविक स्थिति यह है कि ये जनजातियां आज भी विकास की मुख्य धारा से कटे हुए हैं। लेकिन बदलते समय के साथ जिस तरह से समाज और लोगों का विकास हुआ लोगों और समाज में परिवर्तन आया उस तरह से उनका विकास नहीं हो पाया। लोगों के जीवन स्तर, खानपान, आचार विचार, शिक्षा, स्वास्थय में उतरोत्तर वृद्धि हुई, तकनीक का विकास हुआ डीजिटल तकनीक ऑफिस से होते हुए हर हाथों तक पहुंच गया ऐसे में आदिवासी समाज आज भी मुख्यधारा से कटा हुआ है। उनके विकास पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया।

सरकार योजनाएं तो बनाती हैं लेकिन उन योजनाओं का हश्र क्या होता है, उन योजनाओं का लाभ आदिवासी ले पा रहे हैं या नहीं यह जानने के फूर्सत किसी को नहीं है। उनके विकास पर करोड़ों रूपये का आवंटन होता है, लेकिन इन पैसों का आदिवासी विकास में समुचित उपयोग नहीं हो पाता। यह केवल आदिवासी विकास का आर्थिक पहलू है। लेकिन ये भी सच है कि आर्थिक पहलू से ही बाकी पहलुओं का विकास संभव हो पाता है। साथ ही इन विकास कार्यों में मीडिया की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि विकास एक सतत प्रक्रिया है और विकास कार्यों में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, परंपरागत एवं न्यू मीडिया द्वारा लोगों को सूचना, शिक्षा, मनोरंजन जागरूकता, सतर्कता, प्रेरणा आदि प्रदान की जाती है। मीडिया द्वारा विकास योजनाओं व कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार किया जाता है। साथ ही लोगों की प्रतिक्रिया भी सरकार तक पहुंचाई जाती है। आदिवासी विकास में मीडिया की भूमिका का परीक्षण करने पर पता चला कि आदिवासी विकास में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है, लेकिन अफसोस कि आदिवासी मुद्दों को मीडिया गंभीरता से नहीं लेता। आदिवासी मुद्दों पर तभी ध्यान दिया जाता है जब भूमि अधिग्रहण, विस्थापन, आदि बातें सामने आती हैं।

आदिवासी क्षेत्रों में अधिकतर लोग अशिक्षित हैं, इसलिए उस समाज में प्रिंट मीडिया कारगर सिद्ध नहीं हो पाता, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की बात करें तो आदिवासी लोग आर्थिक रूप से इतने संपन्न नहीं हैं कि एक रेडियो सेट तक खरीद सकें। ऐसे में टेलीविजन सेट की तो बात ही नहीं आती। वहीं आदिवासी इलाकों में न्यू मीडिया लगभग नगण्य है, लेकिन वर्तमान दौर में जब धीरे-धीरे हर हाथ तक स्मार्टफोन की पहुंच बढ़ रही है ऐसे में आदिवासी इलाकों और आदिवासी लोगों तक भी न्यू मीडिया की पहुंच विशेष कर सोशल मीडिया की पहुंच बढ़ रही है।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

अध्ययन का महत्व

आज का दौर डिजिटल दौर है। डिजिटल व सोशल मीडिया आज हर हाथ तक पहुंच चुका है। ऐसे में जनजातिय समाज या कहें कि आदिवासी समाज तक भी सकी पहुंच हो चुकी है। बात अगर सोशल मीडिया व न्यू मीडिया की करें तो यह अपने विकास के साथ जनजातीय युवाओं को नए कौशल सीखने और दुनिया से जुड़ने का अवसर देता है, जिससे उनके ज्ञान और क्षमताओं का विकास होता है. यह मीडिया खान-पान, रहन-सहन और रीति-रिवाजों में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करता है, साथ ही उपभोक्तावाद और आधुनिकता की ओर भी आकर्षित करता है। साफ है कि आज के समय में हम मीडिया की भूमिका और उसके प्रभाव को नकार नहीं सकते।

जनजातीय समाज

आदिवासी समाज या जनजातीय समाज या यानि ट्राइबल सोसायटी उन समुदायों को कहते हैं जो एक सामान्य भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं, जिनकी अपनी अलग संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज और साझा पूर्वज होते हैं, जो प्रकृति से जुड़े होते हैं, और एकता व अपनेपन की भावना से बंधे होते हैं, भारतीय संविधान में इन्हें 'अनुसूचित जनजाति' (ST) के रूप में विशेष दर्जा प्राप्त है। ये आज के डिजिटल जमाने में भी आधुनिक सभ्यताओं से दूर दुर्गम इलाकों में रहते हैं, जो विकास की मुख्यधारा से जुड़ते हुए अपनी पहचान भी बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

जनजातीय विकास और डिजिटल मीडिया

वर्तमान दौर सूचना क्रांति का दौर है। कुछ लोग इसे उत्तर आधुनिक काल की भी संज्ञा देते हैं। समय के साथ-साथ परिवर्तन की गति भी बढ़ी है। सोशल व डिजिटल मीडिया ने आदिवासी युवाओं के लिए सीखने का एक नया आयाम प्रदान किया है और ज्ञान एवं कौशल विकास तक उनकी पहुंच पूरी तरह से नई है। इस नए मीडिया से परिचित होने और इसे सीखने के स्रोत के रूप में उपयोग करने की खुली सोच के कारण आदिवासी युवा वयस्कों की तुलना में अधिक लाभान्वित होते हैं। डिजिटल मीडिया किसी भी समय, कहीं भी, कुछ भी सीखने के कई रोचक तरीके प्रदान करता है, इसलिए पारंपरिक शैक्षिक प्रक्रियाओं की तुलना में आदिवासी युवा सीखने के लिए उपलब्ध विकल्पों से अधिक सहज महसूस करते हैं। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से, उत्तर पूर्वी क्षेत्र में दूरसंचार की पहुंच और कनेक्टिविटी का स्तर सीमित है, विशेष रूप से शेष भारत की तुलना में। इसलिए आदिवासी समुदायों को डिजिटल कौशल और साक्षरता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। डिजिटल मीडिया संचार की खुली लाइन प्रदान करता है और उत्तर पूर्वी भारत के विभिन्न संस्कृतियों के आदिवासी युवाओं के लिए नई समझ और सहयोग का निर्माण करता है। उत्तर

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

पूर्वी भारत के आदिवासी युवाओं के लिए सोशल मीडिया अपनी प्रतिभा को दुनिया के सामने पेश करने का एक विशाल मंच बन गया है।

तकनीक ने जनजातीय लोगों के निजी और सामुदायिक वन अधिकारों के दावों को तय करने की प्रक्रिया तेज़ और आसान बना दिया है। अपने स्मार्टफ़ोन का इस्तेमाल करके लोग जॉब कार्ड, राशन कार्ड और विधवा पेंशन के लिए अर्ज़ी देना और उन्हें हासिल करना भी काफ़ी आसान बना दिया है। वहीं सोशल मीडिया भी अपनी बात को दुनया तक पहुंचाने और अपनी संस्कृति को दुनिया तक पहुंचाने के साथ जीवन को आसान जरूर बना दिया है। हालांकि, जनजातीय समुदायों में तकनीक की समझ रखने वालों की तादाद अभी भी बहुत कम है। डिजिटल साक्षरता की कमी अभी भी चिंता का विषय बनी हुई है। जंगल के अधिकारों को मंज़ूरी की दर अभी भी चिंता का विषय बनी हुई है क्योंकि ये दर अभी भी लगभग 50 से 70 फ़ीसद के बीच अटकी है।

निष्कर्ष

मीडिया को आज और भी ज्यादा प्रखर होने की आवश्यकता है। उसे यह अकाट्य सत्य पता है कि भारत की एक तिहाई आबादी गरीबी रेखा के नीचे है। उस आबादी को दो जून का सन्तुलित भोजन भी उपलब्ध नहीं है, खासकर यह स्थिति आदिवासी इलाकों में और भी भयभीत करती है। हमने ऊपर जिन समस्याओं पर बात की है जिनमें ऋणग्रस्तता, भूमि हस्तांतरण, स्वास्थ्य आदि जैसी समस्याएं हैं उनके मूल में आदिवासी समाज की एक और समस्या गरीबी ही है जो सही अर्थों में बेरोजगारी से जुड़ा हुआ है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि देश के सामने सबसे बड़ी समस्या गरीबी व बेरोजगारी है। अगर समय रहते इसका समाधान नहीं हुआ तो विकास की सारी उपलब्धियां बेकार साबित होंगी। जब हर तरफ डिजिटल क्रांति चल रही है वहीं जनजातीय समुदायों में आज भी तकनीक की समझ रखने वालों की तादाद अभी भी बहुत कम है। ये तादाद बढ़ रही है लेकिन आदिवासी इलाकों में डिजिटल साक्षरता की कमी अभी भी चिंता का विषय बनी हुई है। बढ़ते डिजिटल दौर में ये कहा जा सकता है कि भविष्य में शोध डिजिटल-प्रिंट अभिसरण, एआई-आधारित सामग्री विश्लेषण एवं क्षेत्रीय भाषाई विविधता पर केन्द्रित होगा।

संदर्भ सूची

1. आदिवासी सत्ता. (2004). *आदिवासी का डिजिटल मीडिया*. गोंडवाना दर्शन।
2. भीमसिंह, वी. कृष्ण. (2014). *आदिवासी विमर्श*. स्वराज प्रकाशन।
3. गुप्ता, रमणिका. (2012). *आदिवासी भाषा और शिक्षा*. स्वराज प्रकाशन।
4. बबल, अनामीशरण. (2009). *मीडिया: विवाद–संवाद*. श्रीनटराज प्रकाशन।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

5. राजपूत, उदय सिंह. (2010). *आदिवासी विकास एवं गैरसरकारी संगठन*. रावत पब्लिकेशन, पृ. 3।
6. त्रिपाठी, गोपाल. (1973). भारत की जनजातियों का एकीकरण. *वन्यजाति, 21*, 8–13।
7. भट्ट, राकेश. (1995). *जनजातीय उद्यमिता का विकास*. हिमांशु पब्लिकेशन, पृ. 8–13।
8. पाटी, जगन्नाथ. (2004). *Media and tribal development*. Concept Publishing Company।

The Asian Thinker